00/

—o— भाषा विज्ञान के अंग —— o—

भाषा विज्ञान के स्वरूप की सम्पूर्णता उसके विविध अंगों के आधार पर होती है। जिस प्रकार मनुष्य के शरीर की सम्पूर्णता सिर से लेकर पैर तक अर्थात् उसके विविध अंगों से होती है, उसी प्रकार भाषा का अध्ययन भी उसके विविध अंगों के आधार पर ही किया जा सकता है। भाषा या भाषा विज्ञान के विविध अंग निम्नलिखित इस प्रकार हैं —

(i) ध्वनि या स्वन विज्ञान (ii) शब्द या रूप विज्ञान
(iii) वाक्य विज्ञान (iv) अर्थ विज्ञान
(v) पद विज्ञान और (vi) कोश विज्ञान।

भाषा या भाषा विज्ञान के इन विविध अंगों का वैज्ञानिक पद्धति से विवेचन होता है। ध्वनि (स्वन), शब्द (रूप), वाक्य, अर्थ, पद एवं कोश विज्ञान आदि के माध्यम से भाषा का संरचनागत अध्ययन किया जाता है।

(i) ध्वनि (स्वन)-विज्ञान —— ध्वनि-विज्ञान ध्वनियों के सम्बन्ध में पूरी जानकारी देता है। इसको स्वन विज्ञान भी कहा जाता है। अंग्रेजी के "फोनेटिक्स" (Phonetics) का हिन्दी रूपान्तरण ध्वनि है। जो कि भाषा के 'Phone' से बना है। जिसका अर्थ होता है ध्वनि और 'टिक्स' (Tics) विज्ञान का समानार्थी शब्द है। ध्वनि-विज्ञान में ध्वनि विषयक स्वरूप, भेद, उच्चारण अवयव और नियम आदि का वैज्ञानिक रीति से अध्ययन किया जाता है। कुछ विद्वानों ने इसे ध्वनिशास्त्र या वर्ण-विज्ञान भी कहा है।

"मानव जिसके द्वारा बोलता है या जो वायु मुख से निकलकर वागिन्द्रिय के द्वारा कुछ वाणी प्रकट करती है उसे ध्वनि कहते हैं।" बाबू श्यामसुन्दर दास के अनुसार- "ध्वनि शब्द से भाषा विज्ञान में मानव मुख से निःसृत ध्वनियों को ही ग्रहण किया जाता है, अन्य अव्यक्त- अस्पष्ट ध्वनियों को नहीं, इस ध्वनि में वर्ण, शब्द और भाषा सभी का अन्तर्भाव हो जाता है।"

"साधारण बोलचाल की भाषा में ध्वनि उस संवेदना को कहते हैं, जो हमें कानों द्वारा अनुभव होती है। भौतिकी में ध्वनि वह बाह्य कारण अथवा विक्षोभ है, जिससे यह संवेदना उत्पन्न होती है।"

अतः ध्वनि में कथन, संचरण और श्रवण के गुण विद्यमान होते हैं। यही भाषा का आधार है। इसी के सार्थक समूह को भाषा कहा जाता है, जिसका अध्ययन भाषा-विज्ञान करता है।

(ii) शब्द (रूप)-विज्ञान ——— शब्द विज्ञान को प्रायः रूप विज्ञान भी कहा जाता है। शब्द भाषा की लघु और अनिवार्य इकाई है। यह एक सार्थक ध्वनि-समूह है। संस्कृत में शब्द को ब्रह्म कहा गया है। डॉ० भोलानाथ तिवारी के मतानुसार— "शब्द का सम्बन्ध शब्द धातु से है जिसका अर्थ- शब्द करना है।"

कामता प्रसाद गुरु शब्द की परिभाषा इस प्रकार दी है — "एक या अधिक अक्षरों से बनी हुई स्वतंत्र सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं।"

आचार्य श्यामसुन्दर दास द्वारा दी गई शब्द की परिभाषा ——— "वह स्वतंत्र, व्यक्त और सार्थक ध्वनि जो एक या अधिक वर्णों के संयोग से कंठ और तालु

आदि के द्वारा उत्पन्न हो और जिससे सुनने वाले को किसी पदार्थ, कर्म या भाव का बोध हो, उसे शब्द कहते हैं।"

आ० देवेन्द्र नाथ शर्मा के अनुसार —— "उच्चारण की दृष्टि से भाषा की लघुतम इकाई ध्वनि है और सार्थकता की दृष्टि से शब्द।"

(iii) वाक्य-विज्ञान (Syntax) —— भाषा विज्ञान में वाक्य विज्ञान का विशेष स्थान है। भाषा की पूर्णता इसके बिना असम्भव है। इस विज्ञान में वाक्य के परिवर्तन के कारण और दिशाओं तथा उसके निकटस्थ अवयवों पर विचार किया जाता है। अर्थात् "वाक्य विज्ञान भाषा विज्ञान की वह शाखा है, जिसके अन्तर्गत वाक्य निर्माण, वाक्य भेद, वाक्य परिवर्तन आदि का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।"

वाक्य विज्ञान में वाक्य से सम्बंधित सभी तत्वों का विवेचन किया जाता है। भाषा के अन्तर्गत प्रयुक्त पदों के पारस्परिक सम्बन्ध पर विचार करना ही वाक्य विज्ञान का स्वरूप है।

(iv) अर्थ-विज्ञान —— अर्थ विज्ञान अंग्रेजी के "सिमैन्टिक्स" (Semantics) का हिन्दी रूपान्तर है। अर्थ विज्ञान की परिभाषा अनेक विद्वानों ने अनेक प्रकार से दी है। कैयट तथा नागेश्वर के अनुसार— "सभी शब्द जिस प्रवृत्ति-निमित्त के लिए अर्थात् जिस वाक्यार्थ का बोध कराने के लिए प्रयुक्त होते हैं, वही प्रवृत्ति-निमित्त रूप वाक्यार्थ उन शब्दों का अर्थ होता है।"

कुमारिल भट्ट के अनुसार —— "जो

अर्थ जिस शब्द के साथ सम्बद्ध रहता है, वही उसका अर्थ होता है।" भर्तृहरि का कहना है कि "जिस शब्द के उच्चारण से जिस अर्थ की प्रतीती होती है, वही उसका अर्थ है।"

"भाषा विज्ञान की उपशाखा को अर्थविज्ञान कहते हैं, जिसमें भाषा की आत्मा - अर्थ का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।"

(v) पद-विज्ञान (Morphology) ——— वाक्य में प्रयोग शब्द रूप को पद कहते हैं। "शब्द के उस रूप को पद कहते हैं, जो विभक्ति, प्रत्यय या परसर्ग का संयोग ग्रहण कर तथा किसी वाक्य में प्रयुक्त होकर अर्थ बोध एवं भाव बोध में सर्वथा समर्थ होता है।" पद वाक्य का अनिवार्य अंग होता है। इस प्रकार यह शब्द और वाक्य के मध्य का रूप होता है।

(vi) कोश-विज्ञान (Lexicology) ——— कोश विज्ञान, भाषा विज्ञान की एक शाखा है, परन्तु इसके शब्द विज्ञान की एक शाखा मानना अधिक उचित होगा। कोश विज्ञान तो कोश बनाने का विज्ञान है। इसमें हम उन सिद्धांतों की विवेचना करते हैं, जिनके आधार पर कोश बनाते हैं। इसका सम्बन्ध सिद्धांत व्यवहार, विज्ञान और कला से है। भाषा की गरिमा के लिए कोश-ज्ञान आवश्यक होता है। इसमें शब्द से शब्द का आशय बताया जाता है।